डॉ0 राजेन्द्र मिश्र के एकांकी एवं डकैती की समस्या का समाधान

रीना सिंह
पूर्व शोधार्थी (संस्कृत-विभाग)
दीन दयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय,
गोरखपुर

दस्युवृत्ति कुछ व्यक्तियों या व्यक्तियों के समूहों द्वारा दूसरो के सम्पत्ति तथा धन को बलपूर्वक अधिकार करने को कहते हैं अथवा डकैती, हिंसा या हिंसा की धमकी से गैर कानूनी ढंग से किसी अन्य व्यक्ति का धन, सम्पत्ति, पशुधन या अन्य वस्तु छीन लेने को कहते हैं। डकैती करने वाले व्यक्तियों को डाकू या दस्यु कहा जाता है। डाकू को अंग्रेजी में वैन्डिट (Bandit) या ब्रिगण्ड (Brigand) कहते हैं। अमेरिका में डाकुओं को आउटलॉ (Outlaw) कहा जाता है। डाकू अक्सर गिराहों का भाग होते हैं और ऐसे क्षेत्रों में अड्डे बनाते हैं, जहाँ पुलिस और प्रशासनिक लोगों का पहुँचना कठिन होता है। राहजनी भी एक विशेष प्रकार की डकैती होती है, जिसमें यात्रा कर रहे लोगों पर हमला करके उनसे चोरी की जाती है।[1] समुद्री डकैती भी डकैती का एक प्रकार है, जिसके अन्तर्गत समुद्र पर यात्रा कर रही नौका और उसके यात्रियों पर हुयी डकैती या हिंसात्मक चोरी को कहा जाता है। समुद्री डकैती करिने वाले अपराधियों को समुद्री डाकू या जलदस्यु या अंग्रेजी में पाइरेट कहते है, जबकि समुद्र डाके को अंग्रेजी में पाइरसी (Piracy) कहते हैं। ऐसे अपराध की रोकथाम करना कठिन होता है, क्योंकि समुद्र का क्षेत्रफल विशाल है और ऐसे डाकू अक्सर अन्तर्राष्ट्रीय सीमाओं के पार काम करते हैं अर्थात् किसी एक देश की पुलिस या सेना उन्हें रोक नहीं पाती। इसी कारण पूर्वी अफ्रीका के सोमालिया देश के अड्डों से आने वाले समुद्री डाकुओं ने भारत के

1. *'गाइड टू लीगल ट्रासंलेशन'– एम0 डी0 प्रसाद एवं ई0जे0 लेजारस, 1874,*

तट के पास से समुद्री जहाजों का अपहरण किया है।[1] वस्तुतः दस्युवृत्ति का इतिहास बहुत पुराना है तथा भारतीय संस्कृति में अतीत के कुछ जाने माने डाकू आज भी याद किये जाते हैं जैसे वाल्मीकि (रत्नाकर)। विजनौर का सुल्ताना डाकू भी चर्चित रहा, जिस पर एक नौटन्की भी आधारित है।[2] आधुनिक काल में फूलन देवी एक महिला डाकू के रूप में चर्चित रही। अन्य देशों में भी प्रसिद्ध एवं चर्चित डाकू हुए हैं, जैसे अमेरिका में जस्सी जेम्स और विली द किड।[3],[4] । यदि हम प्राचीनकाल के महत्वपूर्ण काव्य ग्रन्थों पर दृष्टि डालें तो महाभारत, रामायण, विष्णु पुराण, शिव पुराण इत्यादि ग्रन्थों में छिटपुट वर्णन किये गये हैं।

श्री विष्णु पुराण में यह तथ्य सन्निहित है कि एक बार अर्जुन भगवान कृष्ण की समस्त पटरानियों को अर्थात् समस्त अनाथ स्त्रियों को अकेले लेकर जा रहे थे। रास्ते में कुछ दस्युओं को लोभ उत्पन्न हुआ और वे समस्त दस्यु स्त्रियों के गहनों, धन तथा सम्पत्तियों को लूट लिये तथा साथ ही साथ उन स्त्रियों को भी अपने अधिकार में कर लिये, जिन्हें अर्जुन साथ में लिये जा रहे थे तथा वहाँ अर्जुन उन दस्युओं से लड़ने में अपने आपको अक्षम पा रहे थे।[5]

यदि रामायण कालीन परिदृश्य पर विचार करें तो वाल्मीकि जी के भयंकर डाकू होने की कथा मिलती है। वाल्मीकि जी घोर जंगल में रास्ते के पास छिपकर खड़े रहते और उधर से आने वाले और जाने वाले यात्रियों को मारकर उसका धन तथा कपड़े–लत्ते छीन लिया करते थे। एक बार उसी वन से नारद जी जा रहे थे।

---

1. *'पाइरसी : द कम्प्लीट हिस्ट्री'– ए0 कोनसटाम्, 2008*
2. *'इकनामिक एण्ड सोसल आस्पेक्ट्स आफ क्राइम इन इण्डिया– बी0एस0 हैकरवाल तथा अन्य ,1934,*
3. *'जेस्से जेम्स : लीजेन्डरी आउटलॉ'– आर0ए0 ब्रुनस ,1998,*
4. *'बिल्ली द किड : बियान्ड द ग्रेव'– डब्ल्यू0 सी0 जेम्सन, 2008,*
5. *श्री विष्णु पुराण,पंचम अंश, पृष्ठ सं0 : 418–419*

वाल्मीकि ने उन्हें भी पकड़ लिया। परन्तु नारद ऋषि ने पूछा कि पहले अपने घर वालों से पूछो, इस पाप में कोई हिस्सेदार बनेगा। ऐसा सुनने पर वाल्मीकि घर वालों से यही प्रश्न पूछने गये। परिवार वालों के उत्तर सुनकर स्तब्ध हो गये तथा लूटपाट और डकैती कभी न करने की ठान ली।[1]

यद्यपि स्कन्दपुराण के वैशाखमाहात्म्य में इन्हें जन्मान्तर का व्याध बतलाया गया है।[2] यदि हम व्याध के क्रियाकलापों पर ध्यान दें तो हम पाते हैं कि व्याध का कार्य शिकार करना था, परन्तु परिवार का भरण–पोषण उचित ढंग से न हो पाने पर वे लूट–पाट, चोरी–डकैती इत्यादि अनैतिक कृत्यों को करने लगते थे। एक ऐसी ही कथा कलिक नामक व्याध के सन्दर्भ में है। कलिक नाम का व्याध सदा परायी स्त्री और पराये धन के अपहरण में ही लगा रहता था। देवताओं के धन को भी हड़प लेता था। उसने अपने जीवन में अनेकों पाप कार्य किये।[3] आगे चलकर कई रूपों में डकैतों को देखा जाने लगा, जैसे समुद्री डकैती, बैंक की डकैती, पिडारी, ठग इत्यादि।

पिडारी लूटमार करने वाले हथियारबन्द डाकुओं के गिरोह होते थे। इनका गिरोह एक स्वच्छन्द दस्यु सैन्य संगठन होता था, जिसमें बीस हजार बेहतरीन घोड़े या इससे अधिक भी शामिल हो सकते थे। ये सभी घोड़े लुटेरों के मुखिया के नियंत्रण में होते थे। एक सर्वाधिक शक्तिशाली सैन्यनायक चीतू की एक छत्र कमान में दस हजार घोड़े थे। इसके अतिरिक्त पैदल सिपाही और बन्दूकें भी थीं। पिंडारियों के पास ऐसी सैनिक योजनाएँ नहीं थी, जिनमें वे अपने अनियमित सैन्य दल के छोटे–छोटे समूहों को भर्ती कर सकें। अतः यही गिरोह पेशेवर लुटेरों के समूह में तब्दील हो जाते थे। पिंडारियों का लक्ष्य सिर्फ अपने लिए लूट का माल और नकदी हासिल करना

---

1. *आदर्श ऋषि–मुनि, –सुदर्शन सिंह गीताप्रेस, गोरखपुर, 2012, पृष्ठ–27*
2. *श्रीमद्दाल्मीकिय रामायण, पृष्ठ–4*
3. *श्रीमद्दाल्मीकिय रामायण, पृष्ठ सं0–19*

होता था। इनकी वफादारी किसी से नहीं थी। ये ऊँच–नीच और अमीर–गरीब सभी को बिना किसी भय और संताप के लूट लेते थे।[1]

इसी प्रकार पेशेवर हत्यारों के रूप में भी ठगों[2] के भी सुसंगठित गिरोह होते थे, जो पूरे भारतवर्ष में विभिन्न छदम् वेशों में विचरते थे। इनके प्रत्येक गिरोह में दस से लेकर सौ तक ठग होते थे। ये ठग लोग धनी वर्ग के राहगीरों को अपने विश्वास में लेकर उनके साथ चलते थे और उपयुक्त अवसर हाथ में आने पर किसी रूमाल से राहगीर के गले पर फन्दा डालकर उसे मार डालते थे। फिर उनका माल लूट कर ये उन्हें दफना देते थे। इस प्रकार ठग लोग का सम्पत्ति लाभ के लिए हत्या करना धार्मिक कर्तव्य होता था और इसे पवित्र व सम्मानित पेशा माना जाता था।

पहली बार अंग्रेजों द्वारा सत्ता ग्रहण करने के बाद ठगों पर नियंत्रण पाने की कोशिश की गयी। सन् 1835 तक 382 ठगों को फाँसी दी गयी और 986 को देश निकाला अथवा उम्र कैद की सजा दी गयी। सालों बाद 1879 में भी रजिस्टर्ड ठगों की संख्या 344 थी तथा भारत सरकार का ठगी व डकैती विभाग 1904 तक काम करता रहा। इसके बाद इस विभाग का नाम बदलकर केन्द्रीय खुफिया विभाग हो गया। अपराधी जनजातियों के लिए यद्यपि अब संगठित रूप से अपराध करके जीवनयापन करना कठिन हो गया है, फिर भी इनका मुख्य पेशा अभी भी अपराध है।[3]

प्रो0 राजेन्द्र मिश्र जी ने दस्युवृत्ति अर्थात् डकैती की समस्या को समाज के अभिशाप के रूप में दखेते हैं तथा यह स्पष्ट करते हैं कि मनुष्य की अत्यधिक धन कमाने की एक अभिवृत्ति बनती जा रही है, जिसके आड़ में वह निरन्तर अति बेकार से बेकार कार्य को करने के लिए उद्यत होते हैं।

---

1. *दलित साहित्य विशेषांक, पृष्ठ सं0–6*
2. *इनसाइक्लोपीडि बिटानिका, ग्यारहवाँ संस्करण, ग्रन्थ संख्या–XXVI, पृष्ठ सं0–896*
3. *दलित साहित्य विशेषांक, 2002, पृष्ठ सं0–7*

मिश्र जी स्पष्ट करते हैं कि कुछ तो परिस्थिति की मार से दस्यु बनते हैं और कुछ अपने झूठे सम्मान को बचाने के लिए डकैत बनते हैं। मिश्र जी ने दस्यु समस्या को पुनर्मेलनम् तथा नात्मानवसादयेत नामक एकांकी में बड़े ही मार्मिक ढंग से प्रस्तुत किया है तथा दस्यु समस्या से निपटने के विभिन्न उपायों को भी प्रदर्शित किया है।

पुनर्मेलनम् नामक एकांकी यह प्रदर्शित करती है कि भोपा नामक उदण्ड बालक आगे चलकर परिस्थितियों की मार से किस प्रकार डकैत बन जाता है। उसे कोई सामाजिक सुधार तथा प्रशासनिक सुधार नहीं मिलता तथा उसे किसी ने परामर्श भी प्रदान नहीं किया।

भूपा डाकू किस प्रकार डाकू बनता है, बड़े ही रोचक ढंग से प्रो0 मिश्र ने अपनी एकांकी 'पुनर्मेलनम्' में प्रस्तुत किया है। इस एकांकी में भूपाल और शोभन शहर के विद्यालय में कक्षा 12 के छात्र हैं। उसी विद्यालय के समीप एक कान्वेन्ट विद्यालय भी है, जिसमें राजलक्ष्मी नाम की एक कन्या पढ़ती है, उसके पिता विश्वविद्यालय के अध्यापक डॉ0 लोचन द्विवेदी है। भूपाल व्यवहार से उदण्ड है। एक बार वह राजलक्ष्मी को रास्ते में आते समय छेड़ता है। ऐसे में शोभन मना भी करता है। परन्तु मना करने के कारण भूपाल उसी से उलझकर मार–पीट करने लगता है। ऐसे में राजलक्ष्मी नामक कन्या तमाशा देख रहे बालकों को कोसती है, जिससे प्रभावित होकर ग्यारहवीं का एक छात्र मोहन, शोभन को भूपाल के चंगुल से छुड़ाता है। उसी दौरान एक शिक्षक को आता देख भूपाल भाग जाता है। समय बीतता है, आगे यही भूपाल परिस्थितियों की मार से एक बड़ा डाकू बन जाता है।

उस घटना के बाद आगे चलकर शोभन तथा राजलक्ष्मी का विवाह हो जाता है। आगे चलकर शोभन थानाध्यक्ष बनता है और उसी जगह नियुक्ति भी पाता है, जिस क्षेत्र में आतंक भूपाल डाकू का होता है। थाने के बाहर रामदीन और मेवालाल सिपाही भूपाल डाकू के बारे में विभिन्न टिप्पणी को प्रस्तुत कर रहे होते हैं,

उसी पर शोभन एक थानाध्यक्ष की भाँति दोनों सिपाहियों से पूछता है। इस डाकू का चरित्र कैसा है। प्रत्युत्तर में दोनों सिपाही डाकू के चरित्र को ठीक और अच्छा बताते हैं और आगे मेवालाल नामक सिपाही कहता है, भूपा नामक डाकू एक राजकुमार था। उसके पिता बाबू कुमार सिंह अंग्रेजों के शासन काल में 24 गाँव के जमींदार थे, लेकिन भूपा की दूसरी माता के अत्याचार से पीड़ित होकर वह दस्यु बन गया। शोभन अपने विद्यालय की घटना याद करके पुनः पूछता है– 'मेवालाल यह बताओ, भूपा पढ़ा लिखा है कि नहीं।' प्रत्युत्तर में मेवालाल कहता है– 'कक्षा दस उत्तीर्ण कर चुका था। इण्टर कक्षा नहीं उत्तीर्ण कर पाया। किसी कन्या के सन्दर्भ में विवाद होने पर विद्यालय से भाग गया, पुनः विद्यालय नहीं गया।'[1]

मिश्र जी यह दर्शाते हैं कि जब व्यक्ति डाकू बन जाता है तो समाज के प्रत्येक व्यक्ति आतंकित रहते हैं। कब और किस गाँव में डकैती व लूट पड़ेगी, इसका भय होता है। समाज में बड़ी ही विडम्बना है कि लोग बुरे व्यक्तियों से आहत होकर डाकू बनते हैं और वे आगे चलकर अच्छों को परेशान करने में संलग्न हो जाते हैं। एक ऐसा ही दृश्य इस एकांकी में तब आता है, जब भूपा डाकू एक गाँव में डकैती डालने जाता है और उसकी योजना धन अपहरण की होती है। यह तथ्य एक मुखवीर रामदीन सिपाही के माध्यम से प्रकट होता है। यथा– 'शाम छः बजे भूपा डाकू शेखरपुर गाँव में धन अपहरण की योजना बना चुका है।'[2]

डकैती की समस्या का समाधान :

1. मित्रवत् एवं प्रशासनिक परामर्श :

1.'*पुनर्मेलनम्',रुपरुद्रीयम् – डॉ0 अभिराज राजेन्द मिश्र , बैजयन्त प्रकाशन, इलाहाबाद, 1986,पृष्ठ सं0–41*

2.'*पुनर्मेलनम्',रुपरुद्रीयम् – डॉ0 अभिराज राजेन्द मिश्र , बैजयन्त प्रकाशन, इलाहाबाद, 1986,पृष्ठ सं0–42*

प्रो0 मिश्र ने यह स्पष्ट किया कि दस्युवृत्ति में दस्यु लोगों के विचारधारा के प्रति ठोस एवं प्रबल विरोध की नैतिक विचारधारा प्रस्तुत होनी चाहिए। तभी दस्युवृत्ति का समाधान सम्भव हो सकता है। दस्युवृत्ति जैसी समस्या को विरोध प्रकट करने वाला व्यक्ति विश्वसनीय हो और विश्वसनीय एवं उचित परामर्श सूचना देने वाला हो, तो निश्चय ही इस समस्या का समाधान सम्भव हो सकता है। ऐसे व्यक्तित्व को धारण करनेय वाला व्यक्ति शोभन है। वस्तुतः शोभन भूपाल का मित्र है और वह प्रशासनिक अधिकारी होते हुए भी भूपाल के लिए विश्वसनीय भी है।

भूपा डाकू शेखरपुर ग्राम में डकैती डालने शाम छः बजे जाता है। शोभन को यह तथ्य पता चलने पर वहाँ पहुँचता है और सारी बाग को घेर लेता है। उसके सिपाही वाजरे के खेत में छिप जाते हैं। वह स्वयं भी सादी वेशभूषा में रास्ते पर खड़ा हो जाता है। भूपा और उसका गुट कपूरपुर गाँव की बाग में इकट्ठा होता है। शोभन और भूपाल की भेंट होती है और डाकू के परिधान और अस्त्र–शस्त्र देखकर शोभन स्तब्ध हो जाता है। शोभन उस डाकू से पूछता है– 'हे प्रभो ! क्या आपका नाम भूपाल है। तत्पश्चात् डाकू समीप आता है और शोमन उसे देखकर न पहचानने का नाटक करके पूछता है। तुम्ही भूपाल हो। प्रत्युत्तर में भूपाल अपने मुख को छिपाते हुए ऊँचे स्वर में बोलता है– कौन भूपाल, कैसे तुम उसे जानते हो ? पुनः शोभन बोलता है– 'भ्रात भूपाल तुमने शोभन को नहीं पाहचना ? कान्वेन्ट छात्रा राजलक्ष्मी के प्रसंग में हमसे और तुमसे संघर्ष हुआ है।'[1]

भूपाल, विश्वसनीय आचरण और व्यवहार देखकर द्रवित हो उठता है और शेभन से वह कहता है– 'भाई शोभन, क्षमा करो मुझे', वर्तमान में मेरी वृत्ति दूसरी हो गयी है। शोभन पुनः पूछता है भूपाल तुम्हारी क्या वृत्ति (वृतान्त) है। तत्पश्चात् भूपाल अपने डाकू बनने का मर्मान्तक कथा शोभन को सुनाता है। शोभन भूपाल की मार्मिक

1. *'पुनर्मेलनम्',रुपरुद्रीयम् – डॉ0 अभिराज राजेन्द मिश्र , बैजयन्त प्रकाशन, इलाहाबाद, 1986,पृष्ठ सं0–41*

कथा सुनकर रो पड़ता है। शोभन भूपाल को आत्मसमर्पण के लिए प्रेरित करता है तथा अच्छे कार्यों में संलग्न होने के लिए पुनः परामर्श देता है, जिसे भूपाल सहर्ष स्वीकार कर लेता है। अन्ततः शोभन अपने बारे में भी बताता है और भूपाल को उसकी हेमामालिनी भाभी राजलक्ष्मी से भेंट करवाता है।[1]

इस प्रकार कथा बड़ी ही मार्मिक ढंग से मिश्र जी ने प्रस्तुत किया है, जिसमें विश्वसनीय और नैतिक व्यक्ति अपने बिगड़ते मित्र या व्यक्ति को उचित परामर्श देकर अच्छे कार्यों में संलग्न हेतु प्रेरित करके आपराधिक कृत्यों पर अवरोध लगा सकते हैं।

परन्तु जब यही कार्य ठीक उल्टा होने लगता है, तो आपराधिक गतिविधियाँ बढ़ जाती हैं और लोग अपने जीविका के निर्वहन में गलत कार्यों के प्रति आकृष्ट होने लगते हैं।

वस्तुतः मित्र ऐसा ही होना चाहिए जो मित्र के गलत कार्यों का प्रत्येक जगह विरोध करे तथा उचित परामर्श दे। मिश्र जी इस एकांकी के माध्यम से यह शिक्षा देते हैं कि समाज को सुदृढ़ एवं अपराधमुक्त करने के लिए अच्छे एवं सच्चरित्र लोगों को आगे आना पड़ेगा।

प्रो0 मिश्र 'नात्मानवसादयेत' नामक एकांकी में यह स्पष्ट उल्लेख करते हैं कि कोई व्यक्ति परिस्थितियों के वशीभूत होकर किस प्रकार चोरी जैसे छोटे–छोटे अपराधों को करते–करते एकाएक बड़ा अपराधी बन जाता है अर्थात् एक डाकू बन जाता है। ऐसे डाकू प्रकट रूप में चिन्हित होते हैं, परन्तु ऐसे भी डाकू विद्यमान हैं, जो समाज में सफेद पोश रूप में जाने जाते हैं और वे कोई भी लूट–पाट, फिरौती,

---

1. *'पुनर्मेलनम्',रुपरुद्रीयम् – डॉ0 अभिराज राजेन्द मिश्र , बैजयन्त प्रकाशन, इलाहाबाद, 1986,पृष्ठ सं0–*

रक्तपात बड़े सफाई से करवाते हैं, जिसका न कोई साक्ष्य है और न ही कोई संकेत है।

इस एकांकी में लोग एक नाटक देखने गये हैं, जिसमें दन्दशुक नामक चोर स्वतन्त्र भारत की आपराधिक गतिविधि को व्यंग्यगात्मक ढंग से प्रस्तुत करता है। यथा–'मैं दन्दशुक नामक चोर हूँ। भारत के स्वतन्त्र होने पर मेरी पदोन्नति हो गयी है। समाज में मेरी प्रतिष्ठा भी कुछ बढ़ गयी है। स्वतन्त्रता के पहले मैं सेंध काटने वाला था। मिट्टी की दीवाल को छेद करने में समर्थ खन्ती मात्र हथियार रखने वाला था। मैं गाँव की गलियों में घूम–घूम कर काली अंधियारी रात्रि में कुत्तों के भौं–भौं की आवाज से परिहार करता हुआ, यत्न पूर्वक वहीं सेंघ बनाकर 2–3 मुट्ठी मात्र अन्न अथवा विक्टोरिया अंकित रूपये को ही सब कुछ मानता हुआ जीवन निर्वाह कर रहा था। परन्तु कष्ट है कि वे दिन चले गये, भारत की स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात् सभी मेरे साथी बदल गये। जैसा–जैसा आचरण श्रेष्ठ लोग करते हैं, दूसरे लोग उसी का अनुकरण करते हैं। माखर चोर कृष्ण के इस वचन को प्रमाण मानकर मेरे द्वारा भी युगानुरूप परिवर्तन हुआ है। अब मुझे जैसा सेंध काटने वाला भी शरीर में सैनिकों के अनुकूल शर्ट–पैन्ट धारण कर और भस्म इत्यादि लगाकर दस्युराज (डाकू) बन गया है।'[1]

आगे वह वर्तमान समय के सफेदपोश अपराधियों को भी प्रदर्शित करते हुए कहता है– 'आप लोगों की मनोवृत्ति को मैंने जान लिया है। कुछ साथी मेरे सहयोग से इस समय विधायक हो गये हैं। आप लोग मुझे भी विधायक देखना चाहते हैं। विधायक भी लीला पूर्वक लूटने ठगने वाले होते हैं। घर के कबूतर के समान यह प्राणी गृहदस्यु है, न तो सेंध काटने की आवश्यकता है, न फिरौती और न ही रक्तपात की समस्या है। पद के द्वारा सभी कार्य साध्य है। चुप रहकर प्रजापालन के नाटक का

1. *नात्यानमवसादयेत , ,रुपरुद्रीयम् – डॉ0 अभिराज राजेन्द मिश्र , बैजयन्त प्रकाशन, इलाहाबाद, 1986,पृष्ठ सं0–12*

अभिनय करते हुए भी सामने से सब लूट लेता है। इसकी मौन ही भाषा है। संकेत मात्र ही सावधानी है। अनेक प्रकार से दृष्टिपात ही जीवन के समाप्त होने की दुर्दशा का पर्याय है। यह प्रजा के लिए साक्षात् यमराज है।[1]

डकैत दन्दशूक दक्षिण भारत के एक प्रान्त के गाँव में डकैती हेतु जाता है। एक घर में प्रवेश करके अपने इच्छित मनोरथ को सिद्ध करना चाहता है। परन्तु वहाँ भी अस्त–व्यस्त स्थिति को देखकर बड़ा ही आश्चर्यचकित होता है। उसे वहाँ ओखली, जाता–चूल्हा, बाल्टी यह सभी दिखायी देता है, परन्तु वहाँ किसी भी कक्ष में सन्दूक या अटारी नहीं दिखाई देती है। ऐसा देखकर दस्यू बड़ा ही क्रोधित होता है और मन ही मन कष्ट देने और प्रताड़ित करने की बात ठान लेता है।[2] परन्तु वहाँ उपस्थित दम्पत्ति की बात सुनकर बहुत ही द्रवित होता है और मन ही मन कुछ संकल्प भी करता है।

यह एकांकी यह स्पष्ट करती है कि समाज में कुछ ऐसे लोग दस्युवृत्ति को करते हैं जो चोरी जैसे छोटे–छोटे आपराधिक कार्यों के अभ्यस्त हो जाते हैं तथा उनमें व्यक्तियों के कष्ट का अनुभव नहीं होता है। ऐसे लोग बड़े–बड़े सफेदपोशों के प्रभाव में भी आकर इस संकृत्य को उद्देश्य तक पहुँचाते हैं। ऐसे सफेदपोशों में नेता, विधायक इत्यादि अनेक बड़े पद को धारण करने वाले लोग सम्मिलित हैं।

वर्तमान जगत् की यह धुधली तस्वीर, प्रो0 मिश्र बड़े ही रोचक ढंग से प्रस्तुत करते हैं तथा प्रो0 मिश्र समस्याओं के विभिन्न समाधानों को करना असम्भावी है, बड़े ही प्रखर ढंग से व्यक्त किये हैं।

---

1. *'नात्मानमवसादयेत्', रुपरुद्रीयम् – डॉ0 अभिराज राजेन्द मिश्र , बैजयन्त प्रकाशन, इलाहाबाद, 1986, पृष्ठ सं0–12*
2. *'नात्मानमवसादयेत्', रुपरुद्रीयम् – डॉ0 अभिराज राजेन्द मिश्र , बैजयन्त प्रकाशन, इलाहाबाद, 1986, पृष्ठ सं0–15*

2. दूसरों के पीड़ा और कष्टों के प्रति संवेदना :

प्रो0 राजेन्द्र मिश्र जी यह प्रदर्शित करते हैं कि दस्यु लोग अपने छोटे–मोटे आपराधिक कार्यों के अभ्यस्त हो जाने के कारण बनते हैं। यद्यपि इन लोगों में दूसरे के कष्टों के प्रति संवेदनाएँ विद्यमान होती हैं। वे सहायतापरक भी होते हैं, परन्तु उन्हें कष्ट का अनुभव हो तो वे दस्युवृत्ति का कार्य छोड़ सकते हैं।

मिश्र जी अप्रच्छन्न रीति से दस्यु को एक गरीब की व्यथा सुनने का दृश्य स्पष्ट करते हैं। दस्यु इस निर्धन दम्पत्ति की व्यथा सुनता है कि उन दोनों को ठण्ड में एक कम्बल भी ओढ़ने को नहीं है, बच्चों को खिलाने हेतु अन्न नहीं है। एक बच्चा बीमार है परन्तु दवा भी उपलब्ध कराने में असमर्थ वह दम्पत्ति है। ऐसे निरिह व्यक्ति की व्यथा सुनकर मन ही मन दस्यु दन्द–शूक कहता है– 'अरे कष्ट है कि पहले मैंने इतनी दरिद्र सृष्टि नहीं देखी, दूसरे के धन को अपहरण करने वाले लूटने वाले मुझको सर्वथा धिक्कार है जो मैंने प्रतिदिन दूसरों के द्वारा धनों को लूटकर उसके अर्जन में लगे हुए लोगों को कदाचित कष्ट देता रहता हूँ। पाप से उपार्जित धन के द्वारा शराब पीकर, जुआ खेलकर, माँस खाकर इस दुष्कर्मों का सम्पादन करता हूँ। इस समय मैं निम्न कार्य करने वाला हो गया हूँ। ये दोनों पति–पत्नी जिनके पास कम्बल खरीदने भर का धन नहीं है, सर्वथा मुझको धिक्कार है, यह कर्म अत्यन्त कठोर एवं अनुचित है।'[1]

दन्दशूक आगे की स्थितियों को देखकर द्रवित होता है और आँसू गिराते हुए कहता है– 'भाई धनी लोगों का ईश्वर भी सुनता है, परन्तु दरिद्रों के लिए भगवान नारायण आँख से अन्धे, कान से बहरे, पैर से लंगड़े और हृदय से पत्थर होते हैं। इस प्रकार अक्षम ईश्वर के सामने क्यों व्यर्थ का प्रलाप कर रहे हो? इस समय मैं जग गया हूँ। इस समय मैं जान गया हूँ। मेरे हृदय में अन्धकार हो गया था, प्रकाश का

1. *नात्मानमवसादयेत्',रुपरुद्रीयम् – डॉ0 अभिराज राजेन्द मिश्र , बैजयन्त प्रकाशन, इलाहाबाद, 1986,पृष्ठ सं0–16*

उजाला इस समय स्फूरित हो रहा है। हे भाई अपने सामर्थ्य के द्वारा धन उपार्जन करके तुम्हारी दरिद्रता को दूर करूँगा। इसके बाद अपने लिए नहीं, अपितु तुम्हारे लिए धन उपार्जन करूँगा।'[1]

इस तथ्य के माध्यम से मिश्र जी ने डाकू में आये हृदय परिवर्तन को प्रदर्शित किया।

3. गलत कार्यों के आभास होने पर दस्युवृत्ति के प्रति हृदय परिवर्तन :

अन्ततः दन्दशुक मन ही मन यह कहता है– 'बहन सही है कि मैं चोर और लुटेरा हूँ। तुम्हारे घर में प्रवेश कर गया हूँ। परन्तु डरो मत, इस समय मैं तुम्हारा सगा भाई हो गया हूँ। यह दन्दशूक शपथ लेता है कि आज से दस्युवृत्ति का जीवन नहीं व्यतीत करूँगा। कल सुबह ही तुमसे भाई का सम्बन्ध बना तुम्हारी दरिद्रता को समाप्त करूँगा। तत्पश्चात् दन्दशूक दीनार की पोटली उस निर्धन दम्पत्ति के पास गिरा कर चला जाता है। यह बात वह तब प्रकट करता है, जब निर्धन दम्पत्ति का पुरुष यह कहता है कि कौन इस घर में चोरी और लूट का कार्य करने आयेगा, यह दरिद्र का घर है।[2]

---

1. *'नात्मानमवसादयेत्', रुपरुद्रीयम् – डॉ0 अभिराज राजेन्द मिश्र , बैजयन्त प्रकाशन, इलाहाबाद, 1986, पृष्ठ सं0–17*

2. *नात्मानमवसादयेत्', रुपरुद्रीयम् – डॉ0 अभिराज राजेन्द मिश्र , बैजयन्त प्रकाशन, इलाहाबाद, 1986, पृष्ठ सं0–18*